भूमिका

आरंभिक समय से ही आदिवासी समाज की अपनी एक अलग संस्कृति व पहचान रही है हाँलाकि हमने उनका उपयोग केवल कला के रूप में अधिक किया है, पहचान के रूप में कम। इसलिए आज बाज़ारीकरण के समय में भारतीय आदिवासियों एवं पाश्चात्य आदिवासियों के वन और अस्मिता को बचाने का कार्य अति आवश्यक सा हो गया है। ये इसलिए कि आदिवासी मूलत: जंगल के दावेदार होते हुएभी जंगलों से अलग किये जा रहे हैं और साथ ही जिस विकास के नाम पर शासन एवं उद्योगपतियों द्वारा, भूमि अधिग्रहण करके उनकी जमीनें तथा कोयला खदानों पर जबरदस्ती से अधिकार किये जा रहे हैं।

बहरहाल, आज हम 21वीं सदी में पहुँचकर भी इनतमाम आदिवासी समाज तथाइनके विकास से कोसों दूर खड़े हैं। इसके परिणाम स्वरूप एक ओर जहाँ आज आदिवासियों के सामने विस्थापन की भयंकर समस्या प्रतीत होती है वहीं दूसरी ओर सरकार की कुछ उदासीन नियमों एवं कानूनों के कारण इनकी स्थिति व परिस्थिति लगातार संकट के घेरे में बनी हुई है । विकास के नाम पर इनका पलायन और विस्थापन जैसे समस्याओं पर आज विचार-विमर्श करना अत्यंत आवश्यक है। इधर कुछ वर्षों में साहित्य के अंतर्गत आदिवासियों द्वारा लिखित साहित्य हो या गैर आदिवासियों द्वारा लिखा गया साहित्य विमर्श के केंद्र में आ रहा है। यहाँ बात ध्यान देने वाली है जो सत्य भी लगता है कि आदिवासी लेखकों द्वारा लिखित साहित्य इनकेवन के अधिक नजदीक है।व्यक्ति जिस समाज में जन्म लेता है उसके पास उस समाज की परंपरा तो रहती ही है और इसके अलावा यह भी मान्यता है कि उसमें भाषाओं को पहचानने की अद्भुत क्षमता होती है इसलिए आदिवासी लेखक द्वारा लिखित साहित्य आदिवासी वन के गहरे अनुभव को व्यक्त कर सकता है। आज हिंदी साहित्य मेंआदिवासी साहित्य का प्रारंभिक दौर ही चल रहा है और जब हम इसकी बात करते हैं तो पाते है कि इनसे संबंधित साहित्य अधिकतर मौखिक साहित्य स्वरूपही सामने आता है। इसलिए आज भारतीय लोक साहित्य आदिवासी साहित्यको मूर्ख, घुमंतू तथा हाशिए पर खड़े हुए, समाज के मौखिक साहित्य केस्वरूप ही समझता है । जबकि उनकी अपनी एक अलग कला, संस्कृति एवं भाषा होती है जो भारतीय इतिहास में अलग पहचान रखती है।

कुल मिलाकर अगर हम देखें तो जहाँ आंचलिक भाषा साहित्य के दृष्टिकोण में उपन्यास के माध्यम से आदिवासी वन के विभिन्न पक्षों पर विमर्श मिलता है वहीं हिंदी भाषा साहित्य में आदिवासी उपन्यास अभी शुरूआती दौर में है।

जहाँ पहला अध्याय के अंतर्गत 'आदिवासी' का अर्थ एवं परिभाषा के साथ-साथ उसके स्वरूप को भी देखने का प्रयास किया है, इसके अलावा वर्तमान में आदिवासी समाज की स्थिति क्या है? ये भी दर्शाया है। वहीं दूसरे अध्याय 'ग्लोबल गाँव के देवता' और 'क़िस्सागो' में चित्रित आदिवासी समाज में आदिवासी समाज, संस्कृति, रहन-सहन, खान-पान, को स्पष्ट दिखाया है

किसी भी समाज को समझना है तो उसकी देश, काल, व परिस्थिति को सबसे पहले समझना जाना चाहिए। यही कारण है कि प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध के तीसरे अध्याय 'ग्लोबल गाँव के देवता' और 'क़िस्सागो' में चित्रित आदिवासी समाज की स्थिति के अंतर्गत, व्यापक परिप्रेक्ष्य में देखते हुए समाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक, स्थिति को प्रस्तुत किया गया है ।इन सबके अंतर्गत 'रणेन्द्र एवं मारियो वर्गास' के लेखक-दृष्टि को भी संपूर्णता के साथ समझने की कोशिश की गयी है ।

चौथा अध्याय 'ग्लोबल गाँव के देवता' और 'क़िस्सागो' में चित्रित आदिवासी समस्या में विस्थापन की समस्या को उजागर करते हुए उनके संघर्ष और प्रतिरोध को रेखांकित किया है ।

उपसंहार में निष्कर्ष प्रस्तुत किया गया है|

आभार

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध के लिए मैं अपने शोध निर्देशक आदरणीया प्रो. प्रीति सागर का आभारी हूँ, जिन्होंने मेरा निरंतर मार्गदर्शन किया। एन.पी.यू. झारखंड के एसोशिएट प्रो. कुमार बीरेन्द्र सिंह का आभारी हूँ, जिन्होंने मेरे विषय पर प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से मार्गदर्शन किया, इसके साथ ही साथ समय-समय पर मेरे आत्म-विश्वास को प्रबल करते रहे। विभागाध्यक्ष प्रो. के. के. सिंह, सहायक प्रो. रामानुज अस्थाना, सहायक प्रो. बीर पाल सिंह यादव, सहायक प्रो. अशोक नाथ त्रिपाठी, सहायक प्रो. रूपेश कुमार सिंह, का आभारी हूँ|

मैं अपने माता-पिता एवं भाई-बहन का आभारी हूँ, जिन्होंने संघर्षरत परिस्थितियों में जीवन-यापन करते हुए भी मुझे ज्ञानार्जन की प्रेरणा दी और इसी का परिणाम है कि मैं यह शोध कार्य पूरा कर सका हूँ। इसके साथ ही मैं अपने अग्रजों अमित कुमार गुप्ता(विशेष उल्लेखनीय), बृजेश चौहान, प्रदीप त्रिपाठी(सहायक प्रो.), अमित कुमार व मनीष कुमार(सहोदर भाई), अनु सुमन बड़ा(तदर्थ सहायक प्रो.) और साथी प्रिया कुमारी का आभारी हूँ, जिन्होंने मुझे आदिवासी समाज की स्थिति प्रस्थिति को समझने और समझाने में काफी मदद की। इसके साथ ही साथ मैं अपने सहयोगी मित्रों तेज प्रताप टण्डन (विशेष उल्लेखनीय), बुधुराम बेहेरा, सत्यवंत यादव, राजू कुमार, संदीप कुमार, मुकेश, बेबी, बिफन, गौतम, मानसी का भी आभारी हूँ जिन्होंने प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से मेरे शोध विषय से संबंधित प्रश्नों पर विचार-विमर्श कर मुझे लिखने की प्रेरणा प्रदान की।

दिनाकं : **प्रेम प्रकाश**